केतु ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों के अनुसार जब मोहिनी रूपी श्री हरि ने स्वरभानु नामक दैत्य के अपने सुदर्शन चक्र से दो भाग किये तो ऊपरी भाग को राहु की पहचान मिली जिसे सिंहिका (असूया) अपने साथ ले गई थी और धड़ एक मिनी नामक ब्राह्मण के पास था, इसी धड़ को भगवान विष्णु ने सर्प का सिर दे दिया और यह धड़ केतु के नाम से विख्यात हुआ। राहु की तुलना में केतु अधिक कष्टदायक नही होता है।

केतु ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

केतु भी अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। इसको छाया ग्रह भी कहते हैं। क्योंकि यह सूर्य और चन्द्रमा के मार्गों के आपस में टकराने से बनता है। यह हमेशा ही राहु से 180° की दूरी पर होता है यह एक दिन में लगभग 3 मिनट (angel वाले मिनट) चलता है, और लगभग 18 महीनों तक एक राशि में रहता है और कुंडली में शारीरिक कष्टों को दर्शाता है। इसको मंगल के गुणों वाला भी माना जाता है। अधिकांश समय केतु भी राहु की तरह वक्री (उल्टा) ही चलता है और अधिकतर मंगल की तरह जातक को फल देता है, परन्तु जीवन में वैराग और मोक्ष की बात की जाए तो मेरी दृष्टि में केवल केतु ही जीव को पूर्ण रूप से वैरागी बना सकता है। दशा केतु की हो, जीवन के सभी कर्तव्य पूरे हो चुके हों और जन्म पत्रिका में केतु बारहवें घर में स्थित हो तो मोक्ष की गारंटी भी देता है। यदि मध्यआयु में ही केतु की दशा जीव को बैरागी बना दे तो जीवन में असफलता और मानसिक तनाव का कारण भी केतु ही होता, क्योंकि केतु यदि शुभ ग्रहों से सम्बन्ध स्थापित न कर सका तो वैराग के साथ विवेक थोड़ा कम होता है, जो एक पारिवारिक व्यक्ति के लिए कष्टदायक होता है। कुछ जन्म पत्रिकाओं में मैंने देखा है कि बृहस्पति भी वैराग और आध्यात्म देता है, पर साथ में विवेक भी देता है, जिससे जातक वैरागी जीवन के साथ-साथ पारिवारिक और सामाजिक जीवन को भी सफलता के साथ निभा लेता है।

केतु ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	कष्ट
2	संबंध	बाधा (रूकावट)
3	स्वभाव	क्रूर, पापी
4	गोत्र	जैमिनी
5	दिन	बृहस्पतिवार
6	वाहन	सर्प, गीध, कपोत
7	रंग	धुंए के रंग का
8	दिशा	पश्चिम-दक्षिण (South-West)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी / सतोगुणी
10	लिंग	नपुंसक/पुरूष
11	वर्ण (जाति)	शूद्र
12	तत्व	छाया/ पृथ्वी/आकाश
13	स्वाद	कटु (कड़वा)
14	धातु	सीसा
15	ऋतु	सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	चना
18	शारीरिक अंग	चर्म (Skin)
19	अन्न दान	काला तिल
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	7 वर्ष
22	जप संख्या	17,000
23	रत्न	लहसुनिया, (संस्कृत में वैदूर्य)
24	उपरत्न	कर्केतक, संघीय, श्येनाक्ष

25	सहचरी	चित्रलेखा
26	चरादि	चर
27	समिधा	कुशा
28	केतु के मित्र ग्रह	मंगल, शुक्र
29	केतु के सम ग्रह	बुध, बृहस्पति
30	केतु के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, शनि, राहु
31	उच्च राशि	वृश्चिक/ धनु (0° से 20° तक)
32	नीच राशि	वृष / मिथुन (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	सिंह / धनु (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	वृश्चिक/मीन
35	राशि स्वामी	वृश्चिक/मीन
36	नक्षत्र स्वामी	अश्विनी, मधा, मूल
37	केतु के आधी देवता	ब्रह्मा
38	केतु के प्रत्यधि देवता	चित्रगुप्त
39	केतु ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	केतु ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह